यात्राओं का जिक्र

(देश)

प्रियंकर पालीवाल

यात्राओं का जिक्र

(देश)

संपादक

प्रियंकर पालीवाल

दुनिया में मानुष जन्म एक ही बार होता है और जवानी भी केवल एक ही बार आती है। साहसी और मनस्वी तरुण-तरुणियों को इस अवसर से हाथ नहीं धोना चाहिए। कमर बांध लो भावी घुमक्कड़ो, संसार तुम्हारे स्वागत के लिए तैयार है।

राहुल सांकृत्यायन, घुमक्कड़ शास्त्र

अनुक्रम

संपादकीय / 7

देश

सौंदर्य की नदी नर्मदा	अमृतलाल वेगड़	
इस नदी की पोशाक है रेत	जाबिर हुसेन	22
नागार्जुनकोंडा की पहचान	कृष्णनाथ	29
काक नदी के उजाड़ तट पर	विजेन्द्र	36
इतिहास में दबे पांव	ओम थानवी	64
बंगाले से गंगाजल	अष्टभुजा शुक्ल	84
द्वार की पत्ती पर ओस की बूंद - कालपी	गोविन्द मिश्र	93
ओरछा : इतिहास का एक गौरवशाली खण्ड	कैलास चन्द्र	105
वर्धा : अनुभवों के आईने में	पी: एन. सिंह	115
धोलावीरा की यादगार यात्रा	अनिरुद्ध सिंह गौर	140
यात्रा अजंता की	नीलेश रघुवंशी	145
सोने के सींग वाला गैंडा	विश्वमोहन तिवारी	149
बस्तर में कुछ दिन	चंद्रकांत देवताले	162
बेलापाट, तोकसिंह अगरिया और भेंगराज पक्षी	शंपा शाह	170
आकाश ऐसे खुलता है !	भरत प्रसाद	186
चाँद का मुँह अब भी टेढ़ा है	विजय शर्मा	212

बचपन का शहर : एक पुनर्यात्रा	प्रमोद सिंह	216
श्रीनगर से लेह-लद्दाख	राजनारायण बिसारिया	222
गोमुख यात्रा	अजय कुमार सिंह	231
मुसाफिर हूँ यारो	वीरेन्द्र गोयल	239
सिक्किम का सौंदर्य	मनीषा झा	245
हरा-भरा प्रदेश हिमाचल	कुसुम राय	251
दो दिन का रोमांच	भूपेन	256
दक्षिण के आकाश पर ध्रुवतारा	ललित सुरजन	258
ईश्वर के अपने देश से लौटकर	नील कमल	274
मेरी कोच्ची यात्रा	पद्मजा घोरपड़े	279
जहाँ पानी और पत्थर बोलते हैं	उषा ओझा	284
सागर से घाटी तक	राखी राय हल्दर	291
कैलास-मानसरोवर यात्रा	जयनारायण कौशिक	297
एक नास्तिक की तीर्थयात्रा	विष्णु नागर	308
गया : आत्मा की मुक्ति का धार्मिक पड़ाव	भगवती प्रसाद द्विवेदी	326
बद्रीनाथ का सुमिरन	यश मालवीय	330
ख्याबिस्तान में गुज़ारा एक दिन	नासिरा शर्मा	334

संपादकीय

यात्रा का देशकाल

मानव का इतिहास दरअसल आव्रजन और यात्राओं का इतिहास है। मनुष्य के बढ़ने का, रुकने का और जाने-लौटने का। सत्तर-अस्सी हजार वर्ष पूर्व आधुनिक मनुष्य-होमो सेपियन्स-अफ्रीका से पूरे विश्व में फैला और आज भी-धीमी पदयात्राओं से हाइपर मोबिलिटी तक-उसकी यायावरी की वृत्ति में कोई कमी नहीं आई है।

यात्राएँ चाहे काल्पनिक हों या वास्तविक, उनका विवरण मन को मोहता है। यात्रा इतिहास में जाना होता है और वर्तमान में लौटना भी। मानव-यात्रा की शुरुआती दास्तानें अत्यंत कल्पनापूर्ण रही हैं। सभी प्राचीन महाकाव्य अपने ढंग के अनूठे यात्रावृत्त भी हैं। रामायण राम की नहीं, राम के अयन की-राम के मार्ग की-कथा है।

यात्राओं का धर्म के साथ गहरा संबंध रहा है। प्राचीन यात्रा-साहित्य का बहुलांश आध्यात्मिक 'स्पेस' में ही रचा गया। राम का वनवास, पाण्डवों का अज्ञातवास, बुद्ध का गृहत्याग या महाभिनिष्क्रमण, मूसा का माउण्ट सिनाई से 'टैन कमाण्डमेंट्स' के साथ लौटना, संत पॉल की यात्राएँ और इलहाम के पहले मुहम्मद की यात्रा, ऐसी यात्राओं के अनुपम उदाहरण हैं।

भारत में आम आदमी आध्यात्मिक यात्राओं पर जाता रहा है और आध्यात्मिक गुरु मानवीय यात्राओं पर-मानव-मुक्ति की यात्राओं पर-निकलते रहे हैं। गांधी की दांडी यात्रा संभवत: आधुनिक भारत की प्रथम राजनैतिक यात्रा थी, जो जन-चेतना के अभूतपूर्व ज्वार का जरिया बनी और जिसने अंग्रेजी शासन की जड़ें हिला दीं।

यात्रा-संस्मरण अंतरसांस्कृतिक हों या अंतरराष्ट्रीय, या अपने ही देश के विभिन्न इलाकों की यात्रा का वृत्तांत; साहित्य की अत्यंत लोकप्रिय विधा हैं। प्रश्न यह भी है कि हाशिए की विधा होने के बावजूद यात्रा-साहित्य की लोकप्रियता का राज क्या है ? समय के साथ यात्रा-साहित्य के स्वरूप और प्रयोजन में क्या बदलाव आया

है?

यह 'करतल भिक्षा, तरुतल वास' का समय नहीं है जिसमें कष्ट और पीड़ा यात्रा का पाथेय हुआ करता था। यह नियोजित यात्राओं का समय है। किंतु सच तो यह है कि यात्रा का एक नाम अनिश्चितता है। योजनाएँ धरी रह जाती हैं और आकस्मिक रूप से उपलब्ध विकल्प ही कारगर साबित होते हैं। इसी कारण अनियोजित और निरुद्देश्य यात्राएँ अधिक रचनात्मक सिद्ध होती हैं। इसलिए यात्रा-वृत्तांत को यात्रा-मार्गदर्शिका होने के मोह से बचना चाहिए।

सच यह हैं कि यात्रा-लेखन में हमें समकालीन साहित्य की सबसे ऊर्जावान और लालित्यपूर्ण पाठ्य-सामग्री मिलती है। यात्रा के आत्मकथात्मक आख्यानों और राजनैतिक पत्रकारिता से लेकर दार्शनिक चिंतन और नृजातीय अभिलेख तक यात्रा-साहित्य की कोटि में आ सकते हैं। कई यात्रा-संस्मरण अंतर्दृष्टिपरक प्रेक्षणों और टिप्पणियों की वजह से निबंध की विधा में घुसपैठ करते दिखते हैं। यात्रा-वृत्तांतों में कहीं यात्रा और प्रकृति प्रेम घुल-मिल जाते हैं तो कहीं इतिहास और समाज-लेखन अंतर्क्रिया करते दिखते हैं। इधर समुद्रपारीय प्रव्रजन और 'डायस्पोरा' अध्ययन के अंग के रूप में भी यात्रा-साहित्य पर विचार किया जाना शुरू हुआ है।

यात्रा-संस्मरण मानव की गतिशीलता की कथाएँ हैं। उसकी सांस्कृतिक समझ के विस्तार का आख्यान। यात्रा-लेखन यात्रा का वृत्तांत तो है ही, कुछ अंशों में यह डायरी, साहित्यिक निबंध और अंशत: इतिहास का मिला-जुला रूप भी होता है। इन वृत्तातों में लेखक का स्वभाव और अध्यवसाय, विश्वास और धारणाएँ, पूर्वग्रह और वाग्विदग्धता सब लक्षित किए जा सकते हैं। इसलिए यात्रा-संस्मरण एक स्तर पर आपकी आत्मकथा भी होते हैं। कुछ यात्रा-वृत्तांत लेखक चित्रकार होते हैं-वे आपके सामने दृश्य खींच देते हैं। सामान्यत: एक ही स्थान के बारे में भिन्न-भिन्न लेखकों के संस्मरणों में जो नवीनता या ताजगी होती है, वह लेखक के व्यक्तित्व-उसकी निजता- की ही ताजगी होती है। प्रामाणिकता, सुसम्बद्धता और टटकापन यात्रा-वृत्तांत का मौलिक गुण है। यात्रा-लेखक होने के लिए एक अच्छा यात्री होना बहुत जरूरी है।

यात्रा-साहित्य चाहे तथ्यात्मक हो या काल्पनिक, मनोरंजन के लिए हो या किसी अकादमिक परियोजना के अंतर्गत आंकड़ा-संग्रहण हेतु, उसका शिक्षा की दृष्टि से महत्व है। यात्राएँ व्यक्तियों और समाजों के बीच सेतु

का काम करती हैं और सांस्कृतिक परिवर्तन को घटित करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका है। यात्रा-साहित्य न केवल सांस्कृतिक विविधता का सम्मान करना सिखाता है, वरन यह अंतर-सांस्कृतिक संवाद को भी प्रोत्साहित करता है। जब हम यात्रा से लौटते हैं तो बदला हुआ 'मनुष्य' होते हैं। घुमक्कड़ अक्सर अपने पहचान-समूह की सुस्थिर इकहरी पहचान में फिट नहीं बैठते और बदलाव का कारक बनते हैं। यात्रा उनकी जीवन-दृष्टि में व्यापक परिवर्तन का बाइस बनती है। संकीर्णता कहीं दूर छूटती जाती है और अनुभवों की विविधता एक व्यापक जीवन-दृष्टि को गढ़ने में सहायक होती है। यात्राएँ आपको परदेश में 'घर' का अहसास करा सकती हैं और यात्राओं की वजह से आप अपने घर में परदेशी हो सकते हैं।

यात्रा-संस्मरण अक्सर एक विशेष दृष्टि के साथ लिखे जाते रहे हैं। चूंकि यात्रियों को साधारणतया घर लौट आना होता है, अन्य स्थानों के बारे में उनका वर्णन अपने घर और चिर-परिचित समुदाय की कसौटी पर निर्भर करता है। यही वह भिन्नता की दृष्टि-अदरनेस का तत्व-है जो अन्य संस्कृतियों के बारे में लिखते समय पश्चिम के लेखकों में दिखता है। इसीलिए साम्राज्यवादी 'नॉस्टैल्जिया' के प्रभाव में लिखे गए भारत-संबंधी यात्रा-वृत्तांतों और इनमें निरूपित भारत की चित्र-विचित्र छवि का परीक्षण भी आवश्यक हो जाता है। यात्राएँ खुले दिमाग से की जानी चाहिए। तभी हम विभेदों के पीछे की एकता को समझने-सराहने का सलीका सीख सकते हैं।

कुतुबनुमा की खोज के पश्चात लंबी समुद्री यात्राओं के वृत्तांत और यूरोपीय जहाजियों की यात्रा-डायरियाँ यात्रा के साथ-साथ उपनिवेशन का भी आख्यान हैं। लंबे समय तक भारत ने अपने को औरों की आँखों से देखा। प्रथमत: पश्चिम के ओरिएंटलिस्टों की नजर से और गौणत: पश्चिम के उन लेखकों की दृष्टि से जो भारत की अतिरंजित आलोचना करने के आदी थे। हम यह मानने लगे थे कि यात्रा-भीरु भारतीय अपनी भौगोलिक-सांस्कृतिक सीमाओं में सिमटे रहते हैं और हममें बौद्धिक उत्सुकता तथा यात्रा के लिए आवश्यक 'उत्साह' व 'उद्यम' की कमी है। घर में बैठे-बैठे धार्मिक-आध्यात्मिक चिंतन करना हमारा स्वभाव है। जबकि शास्त्रों में समुद्री यात्रा के निषेध के बावजूद देशाटन हमारी परंपरा का हिस्सा रहा है। बौद्ध भिक्षु देश-देशांतरों की यात्रा करने वाले सांस्कृतिक दूत थे। गुरु नानक ने तो देश-विदेश में जबरदस्त घुमक्कड़ी की।

तीर्थाटन और रोजगार की तलाश में की गई यात्राओं को छोड़ दें तो आज पर्यटन मूलत: मध्य और उच्च-

मध्यवर्गीय कार्य-व्यापार प्रतीत होता है। अत: यात्रा-साहित्य पर विचार करते हुए विशेषाधिकार का प्रश्न भी महत्वपूर्ण हो उठता है। यात्राएँ किस तरह लेखन को पुनर्बलित करती हैं तथा यात्रा-साहित्य के सर्जकों का देशकाल और उनकी दृष्टि कैसे उस पुनर्सृजित दुनिया के रूढ़िबद्ध निरूपण को ही बल देती है, इस प्रवृत्ति का सम्यक विवेचन भी आवश्यक है।

इस संबंध में वी.एस. नायपॉल के भारत-संबंधी यात्रा-ग्रंथों पर एक दृष्टि डालना रोचक होगा। सन् 1962 में जो भारत नायपॉल को गलाजत से भरा 'तिमिर क्षेत्र' दिख रहा था, वही भारत 1975 में उन्हें 'एक घायल सभ्यता' की मानिन्द नजर आया जिसमें वे अन्तत: सिर्फ 'गंदगी, अक्षमता और मोहभंग' ही देख पाए। किंतु वही नायपॉल जब 56 वर्ष की उम्र में 1988 में भारत आए तो उन्हें एक अंगड़ाई लेते हुए विकासोन्मुख भारत के दर्शन हुए जिसमें उन्हें लाखों रचनात्मक क्रांतियां घटित होती दिख रही थीं। भारतीयता के भदेस महाकाव्य में वे रचनात्मकता और आर्थिक प्रगति का नया सर्ग लिखा जाता देख रहे थे। भारत बदल रहा था या नायपॉल की दृष्टि ? शायद, कुछ हद तक, दोनों। भारत एक प्रिज्य की तरह है। एक पहेली जिसके कई रंग हैं। एक रूबरिक की तरह एक भारत में कई भारत हैं। एक नजर डालकर भारत के बारे में कोई टिप्पणी अहमक साबित होने के खतरे के साथ ही की जा सकती है। भारत को देखने का नजरिया बहुत हद तक देखनेवाले की भौतिक व मानसिक स्थिति और उसके 'लोकेशन' पर निर्भर करता है। वरना अधिकांश यात्रा लेखकों के लिए भारत 'अंधों का हाथी' साबित हुआ है। यहां तक कि प्रवासी भारतीयों को भी देश का सूरज-चांद, हवा-पानी-मिट्टी, यहां तक कि नीम का पेड़ भी, बेचैन किए रखता है और लौटने की आस बनाए-बचाए रखता है। किंतु वापस आते ही उन्हें पालम-दमदम-सांताक्रूज से ही देश का दलिद्दर दिखने-सताने लगता है।

प्रस्तुत संकलन का उद्देश्य समकालीन हिंदी यात्रा-लेखन की चुनिन्दा पाठ्य-सामग्री प्रस्तुत करना है। यात्रा-साहित्य पर केंद्रित इस अंक में चित्रकार राजनेता, समाजशास्त्री, गणितज्ञ, कवि, दार्शनिक, उपन्यासकार, पत्रकार आलोचक, पुरावेत्ता और सेनानायक से लेकर संपादक, राजनयिक, चिकित्सक तथा गृहणियाँ तक शामिल हैं। 'अंगना तो परबत भयो, ड्यौढ़ी भई बिदेस' के कारुणिक सच की पृष्ठभूमि में एक भारतीय स्त्री की यात्रा-संबंधी कठिनाइयों का अनुमान सहज ही किया जा सकता है। अत: इस संकलन में महिलाओं की उत्साहपूर्ण